Substance of the Bible in Hindi verse.

धर्मपुस्तक का सार।

इलाहाबाद मिशन प्रेस में छपी सन १८७३ ई० ॥

नार्थ इंडिया ट्रैक्ट सुसैटी की ओर से

१००० पुस्तकें। दाम ३ पाई ॥

Allahabad 1873

SCP #1956

LIBRARY OF PRINCETON THEOLOGICAL SEMINARY.

PRINCETON REC. SEP 1880 THEOLOGICAL SEMINARY

ગુજરાતી ગદ્યપદ્ય સંગ્રહ

धर्म्मपुस्तक का सार ॥

दोहा ।

ईश्वर है सब लोग यह . जानत हैं जग माहिं ।
धर्म्मग्रंन्थ में लिखा भी . या में अन्तर नाहिं ॥
यह भी बर्णन किया है . जो नहिं मानत ताहि ।
सो जन तो हैं बावरे . या में संशय नाहिं ॥

चौपाई ।

बहुतेरे जन पूछहिं ऐसा । क्या है ईश्वर अरु है कैसा ॥
निर्गुण है कि है गुणमान । कहां बसत है कहो बखान ॥

कौन रूप अरु कौन सुभाव। ताको बर्णन करि समुझाव ॥
बर्णन करों सुनें चित लाय। पूछों उन्हें सो देहिं बताय ॥
निज चेतन को कहि समुझावें। क्या है सो वे मोहि बतावें॥
निर्गुण है कि है गुणमान। कौन रूप है कहें बखान ॥
यदि निज चेतन थाह न पावे। तो अथाह के थाह कस आवे॥
पर जो धर्म्मग्रंथ ने भाई। कहा कहों सो सकल बुझाई॥

दोहा।

बर्णन तत्व सुभाव का. ईश्वर के यह जान।
और जो वाके गुण अमित. ताको सुनि चित ठान ॥

चौपाई।

परब्रह्म का बर्णन जोई। हिय मे धरहु कहों मे सोई॥
रूप रेख पांच तत्वन के। ईश परे है सदा उन्हन के॥
है चैतन्य रूप तें हीन। महाचेतन को वैसा चीन्ह॥
जो कछु उचित सो कहों बखान। ईश्वर को परमात्मा जान॥
निज आत्मा सच्चाई से नित। वाकी सेवा करो जान हित॥
वह असीम अनादि अनन्ता। अरु है नित्य सदा भगवन्ता॥
सकल लोक हैं टलायमान। अटल जो है सो ईश्वर जान॥
दुख सुख भोग सृष्टि में जानहु। ईश्वर को नित्यानन्द मानहु॥
है त्रिलोक वाके आधीन। केवल ईश्वर निर आधीन॥
सर्बदर्शी अरु सर्बब्यापी। वह अनन्त ज्ञानी भी आपी॥

यदपि सामर्थ्य है सबही के। तदपि अमितबल नाहिं किसीके॥
किन्तु सर्व सामर्थी ईश्वर। अरु अनन्त बल है परमेश्वर॥
वह तो शुद्धता में है जैसा। ज्योतिमान तेजस्वी तैसा॥
सच्चा अरु विश्वस्त वही है। और बचन में अटल वही है॥
रहे अनीति वातें अलगानी। नीतिपूर्ण वह कहों बखानी॥
जहं जहं देखहु कृपा भलाई। तहं तहं सो सब प्रभुतें आई॥
यदपि नम्रता वा में बसई। तदपि महातेजोमय अहई॥
अलख अखोज ईश को जानो। अद्वैत सत्य अरु जीवितमानो॥
ईश्वर सर्वलोक का स्वामी। है घट घट का अन्तरजामी॥
यदपि ईश तत्व अद्वैत है। ईश्वरत्व में तदपि ततैत है॥

ईश्वरत्व में तदपि तृतीत है ॥

धर्म्मग्रंथ में जिन के नामा । बर्णन कीन्ह करो सन्माना ॥
नाम एक का पिता कहावे । दूजा नाम पुत्र अस गावे ॥
अथवा बचन जान निजहीय। धर्म्मात्मा है नाम तृतीय ॥
ये तीनों हैं ईश्वर एक । समुझ बूझ हिय लाय विवेक ॥

दोहा ।

बर्णन ईश सुभाव का . अरु गुण का करि भाख ।
अब कछु वाकी क्रिया का . सुनिके चित धरि राख ॥

चौपाई ।

वेद शास्त्र बहु भांति पुराना । ग्रंथ अनेक बहु ज्ञान बखाना ॥
बुद्धि समान सब मिलि अनुमाना । निज निज मति अनुसार

बखाना ॥ कोउ कोउ जग रचना नहिं मानहिं । सृष्टहि किन्तु अनादि बखानहिं ॥ चार बेद नहीं एक प्रकारा । जिन में सृष्टि को बहु बिस्तारा ॥ बहु बिध कहहिं सृष्टि की रचना । सहसन्देह तिन्हन के बचना ॥ करत बिचार खुलत है भाई । ईश्वर योग्य उनहुं न बताई ॥ अब मैं बर्णन करों बखानी । जेहि बिधि धर्म्मग्रंथ की बानी ॥ आदि समय में ब्रह्म अपारा । पृथ्वी स्वर्ग को कीन्ह पसारा ॥ पुनि प्रभु तुरतहि ज्योति बनाई । अन्धकारतें तेहि अलगाई ॥ तब प्रकाश को दिन प्रभु कहेऊ । तम का नाम राति भयेऊ ॥ संध्या प्रातः काल तब भयेऊ । इहि बिधि प्रथम दिवस होइ गयेऊ ॥

दूजे दिन प्रभु पवन बनावा । करि दुइ भाग नभहि बिलगावा ॥ तीजे दिन प्रभु आज्ञा दयेऊ । जल एकत्र होइ सिन्धु सेा भयेऊ ॥ शुष्क भूमि जल तें अलगानी । नाम तासु तब पृथ्वी बखानी ॥ परब्रह्म की आज्ञा पाई । भांति भांति तिन्ह तृण उपजाई ॥ बात कहत प्रभु चौथे दिन में । दुई ज्योति रचि राखा नभ में ॥ दिवसाध्यक्ष सूर्य्य करि राखा । चन्द्र प्रधान राति को भाखा ॥ दिवस मास ऋतु वर्ष को ज्ञाना । होय जिन्हहि तें करि परमाना ॥ पंचम दिन को सृष्टि इहि भांती । कीट पतंग मच्छ बहु जाती ॥ प्रभु आज्ञा तें इन को भाई । जलने बिलगि बिलगि उपजाई ॥ छठवें दिन प्रभु भूमि

हि कहेऊ । पशु अनेक तिन उत्पन्न कियेऊ ॥ सृष्टि अन्त में मानुष रचेऊ । जेहि प्रकार तें सो अब भयेऊ ॥ प्रभु पृथ्वी की धूलिहि लीन्हा । पुतला मानुष का तब कीन्हा ॥ जीवन श्वास फूकेउ नथुनोंतें । जीवित प्राण भयेउ सो तबतें ॥ सकल जगत प्रभुता तेहि दियेऊ । पृथ्वी प्रधान ताहि को कियेऊ ॥ पुनि तेहितें पसुली एक लीन्ही । उपकारिणी नारि रचि दीन्ही ॥ इहि बिधि ते पति पत्नी भयेऊ । करि सम्बन्ध ईश अस कहेऊ ॥ अलग मातु पितु तें नर रहई । पति पत्नी के संगहि बसई ॥ कहेउ बिचार जगत की रचना । जेहि बिधि धर्म्मग्रंथ के बचना ॥ भये सकल जब पूरण कामा । सतवें

दिवस किया बिश्रामा ॥ इहि कारण सब देश में भाई । सात दिवस व्यवहार सो होई ॥

दोहा ।

ईस क्रिया बर्णन कियो . पृथक पृथक समुझाय ।
अब मानुष की भ्रष्टबिधि . कहों सुनहु चित लाय ॥

चौपाई ।

पाप बिषय मैं बहु बिधि ज्ञाना । जग में भाषहिं करि परमाना ॥ बहु हिन्दू भाषहिं धरि धीरा । पाप पुण्य मिलि बना शरीरा ॥ आगे का वृत्तान्त न जानें । अरु बहुतेरे ऐसो मानें ॥ ईश्वर की लीला है भाई । अरु मायाकृत

कहत बुझाई ॥ कृष्ण कहयौ अर्जुन से जोई । भगवद्गीता में है सोई ॥ पाप पुण्य जग में नहिं मानो । जो कुछ लखहु सेा मोतें जानेा ॥ है जो जग में मैंहिं बनाओं । नट पुतली सम सभै नचाओं ॥ रामायण हू में रचि राखा । बचन सदाशिव गिरिज हि भाखा ॥ उमा दारयोषित की नाईं । सभै नचावत राम गेासाईं ॥ नट मर्कट इव सभै नचावत । राम खगेश वेद अस गावत ॥ ईश्वर येाग्य बचन यह नाहीं । करि बिचार देखेा मन माहीं ॥ बूझे सूझि परत अस भाई । जाके मन जस भावना आई ॥ सेा तैसा बर्णन करि गावा । ठीक भेद इनहूं न बतावा ॥ मुसलमान यद्यपि अस जानें ।

जग मे अघ शैतानत माने ॥ पर मानुष मे पाप स्वभावा ।
जानहिं नहीं कहांतें आवा ॥ यातें अस बिचार मन आवा।
भेद सकल उनहूं नहिं पावा ॥

दोहा ।

निज निज मति अनुसार . सब कथहिं जगत में ज्ञान।
अब मैं धर्म्मग्रंथ तें . कहों बचन परमान ॥

चौपाई ।

अब मैं कहों सुनहु परमाना । धर्म्मग्रंथ के बचन समाना ॥
जब ईश्वर मानुष को रचेऊ । निज सम शुद्ध अरु पावन
कियेऊ ॥ जहां लगि जीव चराचर नाना । सकल ऊपर

तेहि कीन्ह प्रधाना ॥ तहां सुन्दर एक बाग लगावा । आदि पुरुष को वहां बसावा ॥ अरु नारी को प्रभु रचि दीन्हा । उन्ह यही आज्ञा तब कीन्हा ॥ सकल बृक्ष का फल तुम खाएहु । एक बिटप से कबहुं न खाएहु ॥ जो वहि तरवर का फल खैहो । कहों तुम्हें निश्चय मरिजैहो ॥ पर शैतान तहां तब आवा । सर्प रूप धरिके बहकावा ॥ अरु नारी से कहेसि बनाई । अन्तर कपट बचन मृदुताई ॥ जो यहि तरवर का फल खैहो । सत्य कहों नाहीं मरिजैहो ॥ किन्तु ज्ञान में भले बुरे के । नेत्र उघर जैहैं हियरे के ॥ होइ हो निश्चय ईश समाना । सुनि त्रिय तासु बचन को माना ॥

ईश बचन को मिथ्या जाना। बैरी बचन सत्य करि माना॥ आप खाय निज पतिहि खिआयो। इहि बिधि पाप जगत में आयो॥ बश में होए बैरी के दोऊ। आदि पुरुष और नारी सोऊ॥ जिव्हा स्वाद सुखद करि जाना। अरु महिमा लग ईश समाना॥ अपने को अरु निज बंशन को। भ्रष्ट कीन्ह अरु मृतक सभन को॥ आदि पुरुष की ओर से भाई। पाप जगत में है दुख दाई॥ पापहि कारण मृत्यु निवासा। जेहितें होय सभनके नासा॥ बृद्ध तरुण बालक नर नारी। पापी सकल नरक अधिकारी॥

दोहा।

जग में पाप प्रवेश बिधि. मानुष भ्रष्ट बिधान।

कहि समुझाएउ देइके धर्म्मग्रंथ परमान ॥
अब मानुष निस्तार बिधि कहों सुनो चित लाय।
जेहि माने तें नरकभय शोक मोह मिट जाय ॥

चौपाई।

जग में मुक्ति विषय बहु ज्ञाना। निज निज मति अनुसार बखाना ॥ सोचे बचन जो उन के कोई। ईश योग्य एकहु नहिं होई ॥ रोपहिं सब मिलि जग में भाई। दुइ प्रकार की बात बनाई ॥ कोऊ कहें करनी से होई। नरक बचाव मन्दमति सोई ॥ इहि कारण पूजा तप ध्याना। करहिं दान तीरथ ब्रत नाना ॥ दूजे कहहिं नहीं कछु पापा। और

न पुण्य ईश सब आपा ॥ हैं मिथ्या दोनों यह ज्ञाना । सत्य भेद इनहूं नहिं जाना ॥ सब जानहिं कि किये सुकर्मा । नहीं छूटिहैं निन्दित कर्मा ॥ जप तप तीरथ जोग समाधि । कलि मति विकल न कछु निरुपाधि ॥ करतहु सुकृत न पाप सिराहीं । किन्तु छिनहीं छिन बाढ़त जाहीं ॥ और ईश बाणी अस कहई । जो ईश्वर आज्ञा नहिं गहई ॥ ईश्वर स्राप तासु सिर ऊपर । झूमि रहा है यह निश्चय कर ॥ इहि कारण करनी से भारी । नरक निबास योग्य नर नारी ॥ ऐसो यदि कोउ कहे जग माहीं । हम तो पापहि मानत नाहीं ॥ तो क्या उन के पाप नसाई । होनहार

ऐसो नहिं भाई ॥ अब मैं धर्म्मग्रंथ की बानी । बरनों मुक्ति बिषय रससानी ॥ मुक्ति पदारथ जो तुम जानहु । सो ईश्वर की ओर से मानहु ॥ मानुष भ्रष्ट भयो जेहि काला । प्रगट भये तब दीनदयाला ॥ मुक्ति को मार्ग ताहि बतावा । और बचन यह ईश जनावा ॥ जगतारक त्रिय से अवतरि है । सिर शैतान को भंजन करि है ॥ याको तत्व अर्थ सुनि लेहू । कहों पुकारि न कछु सन्देहू ॥ प्रभु निज सुत जग माहिं पठैइहै । नारि गर्भ तें जन्म जो लैइहै ॥ वह मानुष के पाप मिटैहै । कर बैरी से वही छुड़ैहै ॥

दोहा ।

जन्म लेन उपदेश अरु . जो करनी प्रभु केरि ।
अब तिन को बर्णन करों . धर्म्मग्रंथ में हेरि ॥
और मरण पुनि जी उठन. अरु निज राज्य में जान ।
क्रम से सब बर्णन करों . सुनहु बन्धु दै कान ॥

चौपाई ।

जन्मकाल जब आय तुलाना । तब स्वयमीश्वर कृपानिधाना ॥ निज सुत को जग माहिं पठावा । यसू मसीह नाम तिन पावा ॥ जाय जगत में सब पापिन को । करे निस्तार नरक भागिन को ॥ कन्या गर्भ मांहिं बसि जोई । पाप रहित उपजा प्रभु सोई ॥ बाल अवस्था से तेहि ऊपर ।

लागे होन बिरोध महाबर ॥ और सयान भयो जब ईसा ।
मंगलसमाचार उपदेशा ॥ लगा करण सो नगर नगर में ।
ग्राम ग्राम में और डगर में ॥ और कहन लगा सबहीतें ।
जानहु सत्य बचन यह जीतें ॥ जो लगि नूतन जन्म न
होई । ईश्वर राज्य योग्य नहीं कोई ॥ और बात यह दीन्ह
जनाई । देखहु ईश्वर कृपा भलाई ॥ ऐसो प्रेम जगत पर
कीन्हा । निज सुत एकलौते को दीन्हा ॥ जेहितें पापी
मानुष कोई । निज अघ कारण नाश न होई ॥ पर बिश्वास
जो तापर लावे । निश्चय करि उद्धार सो पावे ॥ जब लों
रहेउ जगत में स्वामी । कियेउ सुकर्म सो अन्तरजामी ॥

बड़ो बड़ो आश्चर्य्य दिखावा। बहुतेरन बांछित फल पावा॥ दृष्टि दान दीन्हे अन्धन को। पदगामी कीन्हे पंगुन को॥ और हस्त टुंडन को दीन्हे। अर्द्धांगिन को चंगे कीन्हे॥ सुस्थिर कीन्हे बिबिध रोगिन को। और शुद्ध कीन्हे कोढ़िन को॥ जीवदान मृतकन को दीन्हा। तदपि न बहुतेरे तेहि चीन्हा॥ पांच सात रोटिन से स्वामी। बहु सहस्र को अन्तरजामी॥ उदर पूर्ण करि सभै जेवांवा। परमानन्द सकल जन पावा॥ और गमन सागर पर कीन्हा। आंधि हि तुरित रोक सो दीन्हा॥

दोहा ।

ऐसे बहु अचरज किये . कहां लगि कहों बखान ।
संछेपहिं बर्णन कियो . सुनहु बंधु दै कान ॥

चौपाई ।

यद्यपि करत रहे एहि भांती । तदपि न मिले चैन दिन राती ॥ जीवन भर निर्धन सो रहेऊ । निज निवास लगि भवन न कियेऊ ॥ हां वह आपहि कहत पुकारी । बचन सत्य जानहु नर नारी ॥ बन्यपशुन के मांद घनेरे । नभ पंछिन के हेतु बसेरे ॥ मेरे कारण जग के माहीं । सीस धरन को ठौरहु नाहीं ॥ दुष्टन ने नित ताहि सतावा । अरु

दुबचन अनेक सुनावा ॥ तदपि उन्हें न कह्यो कछु स्वामी ।
महा पुरुष प्रभु अन्तरजामी ॥ अन्त समय दुष्टन अस कीन्हा ।
चोर बधिक सम तेहि धरि लीन्हा ॥ टांगेन्हि काष्ठ उपरि
तेहि काला । अन्धकार भये रवि तत्काला ॥ टंगा पहर
दुई लों तहां रहेऊ । ता पीछे निज प्राणहिं दियेऊ ॥ कंपि
भूमि भूधर बहुतेरे । उठे समाधि तें सन्त घनेरे ॥ प्रभु कृपाल
तीजे दिन माहीं । जीव उठा कछु संशय नाहीं ॥ शिष्यन
को निज दर्श दिखावा । दिन चालीस उन मांहिं बितावा ॥
उन्हें कहा आज्ञा मन मानो । सकल जगत में करहु पयानो ॥
मंगलसमाचार सब काहू । देहु सुनाई लेहु यश लाहू ॥

सुनि मो पर बिश्वास जो लैहैं । सो अनन्त जीवन को पैहैं ॥
जो बिश्वास न लैहैं भाई । सो अनन्त पीड़ा में जाई ॥
जौ लग अन्त न होइ है जग के । रहिहों संग सदा तुम
सब के ॥ प्रण करि कहा स्वर्ग जब जैहों । धर्म्मात्मा तुम
पास पठैहों ॥ सकल धर्म्म सो तुम्हें बताई । हिय में बसि
नित करहि सहाई ॥ धर्म्मात्मा बसिहै हिय जाके । अघ तें
दूषित करिहै ताके ॥ सत्य धर्म्म अरु न्याय विज्ञाना । प्रगट
करेगो सोई स्याना ॥ ताही पर साक्षी सो देइहै । सदा
कुशल वाहीतें होइहै ॥ इहि बिधि दृढ़ करि देइ असीसा ।
गयो स्वर्ग पर जगत अधीसा ॥ बैठेउ जाय राज्य निज माहीं ।

कबहु अन्त जासु को नाहीं ॥ इन बातन तें ऐसो खुलई ।
ईश्वर सुत मसीह प्रभु अहई ॥ और जगत का स्वामी सोई ।
जिस से मुक्ति पाप तें होई ॥ मानुष कारण प्रभु अस कियेऊ ।
अपनो प्राण समर्पण कियेऊ ॥ हम सब के अघ कारण जोई ।
प्रायश्चित्त भयो प्रभु सोई ॥ हमें उचित इहि कारण अहई ।
धर्म्मग्रंथहू इहि बिधि कहई ॥ निज भ्रष्टता से हम लोगू ।
लज्जित होयें करें नित सोगू ॥ अपने पापन से पछतावें ।
मिथ्या आशा सकल मिटावें ॥ जो कृपाल प्रभु मुक्ति को दाता ।
यसू मसीह जगत का त्राता ॥ लावहिं तासु ऊपर बिश्वासा ।
गहें वाहि प्रभु की हम आसा ॥ जेहितें पाप हमारे भाई ।

क्षमा किये जावें दुखदाई ॥ अरु ईश्वर सिंहासन आगे। निष्पापी हम होहिं सुभागे ॥ अरु धर्मी जाने प्रभु सोई। जेहि तें मुक्ति हमारी होई॥ सबतें बिनय करों कर जोरी। मानहु सत्य बचन यह मोरी॥ बंधु प्रतीति मसीह पर लाओ। जेहि तें मुक्ति पदारथ पाओ॥ सकल नरक पीड़ा से बचिहो। सदा स्वर्ग में हर्षित बसिहो ॥

इति।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

११९ एकसौ उन्नीसवां गीत ॥

जो मार्ग में सिद्ध हैं और जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलते हैं सो धन्य हैं। जो उस की साक्षियों को धारण करते हैं और अपने सारे मन से उसे ढूंढ़ते हैं सो धन्य हैं। वे अधर्म भी नहीं करते वे उस के मार्गों पर चलते हैं। तू ने ध्यान से अपनी आज्ञा पर चलने की आज्ञा किई हाय कि तेरी बिधिन को पालन करने को मैं चलाया जाऊं। जब मैं तेरी सारी आज्ञाओं को मानूंगा तब मैं लज्जित न हूंगा। जब मैं तेरे धर्म्म के बिचारों को सीखूंगा तब मैं मन की खराई से तेरी स्तुति करूंगा। मैं तेरी बिधि को पालन करूंगा तू मुझे सर्बथा मत त्याग ॥